



---

.. bhagavatyaShTakam ..

॥ भगवत्यष्टकम् ॥

Sanskrit Document Information

---

Text title : bhagavatyaShTakam

File name : bhagavatii8.itx

Category : aShTaka

Location : doc\_devii

Author : amaradAsa

Language : Sanskrit

Subject : philosophy/hinduism/religion

Proofread by : Sridhar - Seshagiri <sesgagir at engineering.sdsu.edu>

Latest update : November 26, 2001, November 27, 2016

Send corrections to : Sanskrit@cheerful.com

Site access : <http://sanskritdocuments.org>

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

---

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

November 27, 2016

*sanskritdocuments.org*

---

## ॥ भगवत्यष्टकम् ॥

नमोऽस्तु ते सरस्वति त्रिशूलचक्रधारिणि सिताम्बरावृते शुभे  
मृगेन्द्रपीठसंस्थिते ।

सुवर्णबन्धुराधरे सुझल्लरीशिरोरुहे सुवर्णपद्मभूषिते नमोऽस्तु ते महेश्वरि ॥  
१ ॥

पितामहादिभिर्नुते स्वकान्तिलुप्तचन्द्रभे सरत्नमालयावृते भवाब्धिकष्टहारिणि  
।

तमालहस्तमण्डिते तमालभालशोभिते गिरामगोचरे इले नमोऽस्तु ते  
महेश्वरि ॥ २ ॥

स्वभक्तवत्सलेऽनघे सदापवर्गभोगदे दरिद्रदुखहारिणि त्रिलोकशङ्करीश्वरि ।  
भवानि भीम अम्बिके प्रचण्डतेज उज्ज्वले भुजाकलापमण्डिते नमोऽस्तु ते  
महेश्वरि ॥ ३ ॥

प्रपन्नभीतिनाशिके प्रसूनमाल्यकन्धरे धियस्तमोनिवारिके विशुद्धबुद्धिकारिके  
।

सुरार्चिताऽङ्घ्रिपङ्कजे प्रचण्डविक्रमेऽक्षरे विशालपद्मलोचने नमोऽस्तु ते  
महेश्वरि ॥ ४ ॥

हतस्त्वया स दैत्यधूम्रलोचनो यदा रणे तदा प्रसूनवृष्टयस्त्रिविष्टपे सुरैः  
कृताः ।

निरीक्ष्य तत्र ते प्रभामलज्जत प्रभाकरस्त्वयि दयाकरे ध्रुवे नमोऽस्तु ते  
महेश्वरि ॥ ५ ॥

ननाद केसरी यदा चचाल मेदिनी तदा जगाम दैत्यनायकः स्वसेनया द्रुतं  
भिया ।

सकोपकम्पदच्छदे सचण्डमुण्डघातिके मृगेन्द्रनादनादिते नमोऽस्तु ते  
महेश्वरि ॥ ६ ॥

कुचन्दनार्चितालके सितोष्णवारणाधरे सवर्करानने वरे निशुम्भशुम्भमर्दिके  
।

प्रसीद चण्डिके अजे समस्तदोषघातिके शुभामतिप्रदेऽचले नमोऽस्तु ते  
महेश्वरि ॥ ७ ॥

त्वमेव विश्वधारिणी त्वमेव विश्वकारिणी त्वमेव सर्वहारिणी न  
गम्यसेऽजितात्मभिः ।

दिवोकसां हिते रता करोषि दैत्यनाशन शताक्षि रक्तदन्तिके नमोऽस्तु ते  
महेश्वरि ॥ ८ ॥

पठन्ति ये समाहिता इमं स्तवं सदा नराः अनन्यभक्तिसंयुताः  
अहर्मुखेऽनुवासरम् ।

भवन्ति ते तु पण्डिताः सुपुत्रधान्यसंयुताः कलत्रभूतिसंयुता व्रजन्ति  
चाऽमृतं सुखम् ॥ ९ ॥

॥ इति श्रीमदमरदासविरचितं भगवत्यष्टकं समाप्तम् ॥

---

.. bhagavatyaShTakam ..

was typeset using Xe<sub>La</sub>TeX 0.99996

on November 27, 2016

---

Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

